THE NATURE OF THE CHANGING URBAN MORPHOLOGY OF THE CITY OF BIKANER
बीकानेर शहर की बदलती नगरीय आकारिकी का स्वरूप

Shofin[1*] and Manish kumar[2]
[1]Research scholar, Department of Geography, Govt. Dungar College, Bikaner
(Affiliated to Maharaja Ganga Singh University Bikaner (Rajasthan)
[2]Research scholar, Dept. of Geography, Govt. Lohia College, Churu
(Affiliated to Maharaja Ganga Singh University Bikaner (Rajasthan)
E-mail: [1]shofinchouhan@gmail.com

ABSTRACT

It is the urban morphology of Bikaner district, which is located in the Thar desert, where there is no river and irrigation is done by canals. Since ancient times, several historic citadels and the streets of the city have been covered in this district. Visitors have flocked to the site in droves. Bikaner's urban morphology is always changing, therefore we must focus on the good parts of the city, such as roads, the water of Sursagar, railway gates, illegal checks in the streets, more mining, and so on, in order to grow. As a result, a tourist destination like Bikaner has a smaller population than other nearby areas. This neighborhood's prospects will improve if the word gets out about the good things happening here. If we want to have a bright future for Bikaner, we need to focus on aspects that enhance the urban morphology, such as improving the district's mineral resources. As a result, major improvements must be made to Bikaner's urban districts around the nation.

बीकानेर जिला जो कि थार रेगिस्तान का हिस्सा है, जहां कोई नदी नही है नहर के माध्यम से सिंचाई कार्य किया जाता है जिले की नगरीय आकारिकी ही लोगो का जीवन बसर का संसाधन है जहां प्राचीन समय से ही कुछ पुराने गढ़ और यहां शहर की गलियों को देखने सैलानी आते रहे हैं। शोध क्षेत्र बीकानेर की नगरीय आकारिकी के बदलते स्वरूप को मद्देनजर नजर रखते हुए हमें बीकानेर के सकारात्मक पहलूओं पर काम कर विकसित किया जाने से है बीकानेर जिले के मूलभूत कारक जैसे सड़के, सूरसागर का पानी ,रेलवे फाटक , शहर की गलियों में अवैध चौकियां, अधिक खनन आदि ऐसे कारक जिस से नगर का आकार प्रभावित होता है बीकानेर जैसा जिला जहा पर्यटन की दृष्टि से सैलानी आते हैं ।अगर यहां के सकारात्मक चीज़े बाहर जाएगी तो ये जिला और प्रगति करेगा । बीकानेर जिला व्यवसाय के माध्यम से भी बीकानेर जिले में उपयुक्त खनिज है जिससे हमें जिले का भविष्य उज्ज्वल दिखाई पडता है तो हमें नगरीय आकारिकी को बेहतर बनाने वाले कारकों पर कार्य करना चाहिए । जिस से देश में बीकानेर का अस्तित्व बना रहे व्यापक रूप मिल शहरी क्षेत्रों पर कार्य किया जाना है।

Keywords: Morphology, Nature, Bikaner City, Urban.
शब्द कुंजी: आकारिकी, स्वरूप, बीकानेर शहर, नगरीय।

1. नगरीय आकारीकी का परिचय

नगरीकरण का प्रारंभ लगभग 2500 ई. पूर्व में सिंधु घाटी की सभ्यता से माना जाता है तब से लेकर अब तक निरंतर विभिन्न स्तरों में नगरीकरण बढ़ता जा रहा है। विकसित एवं विकासशील देशों में असंतुलित नगरीकरण की समस्या अनुभव की जा रही है जिसका मुख्य कारण रोजगार के केंद्रों का नगरों में होना व औद्योगिकीकरण है तथा नगरों में नगरीकरण बढ़ने का एक प्रमुख कारण वहां के आकर्षक कारक भी हैं। नगरों में विभिन्न स्तरों में बढ़ते हुए नगरीकरण से उनकी नगरीय आकारिकी निरंतर बदल रही है।

2. बीकानेर नगरीय विकास के सिद्धान्त

नगरीय भूमि उपयोग सम्बन्धी नवीन योजना समुचित नगरीय विकास के लिए बनाई जाती है। नगर की आन्तरिक संरचना के अन्तर्गत उपयोग की जाने वाली भूमि का विश्लेषण तथा नगर के बाहय क्षेत्र में अवस्थित भावी विकास के लिए आरक्षित भूमि, जिसे नगर निगम सीमा के अन्तर्गत आत्मसात किया गया है, का विश्लेषण की नगरीय विकासीय सिद्धान्तों के अन्तर्गत किया जाता है। इसी प्रकार बीकानेर शहर के विकास के संदर्भ में भी अनेक सिद्धान्तों जैसे सकेन्द्रिय वलय सिद्धान्त खण्ड सिद्धान्त, बहुनाभिक सिद्धान्त, संयुक्त वृद्धि सिद्धान्त व कार्य व निवास स्थान विचार सिद्धान्तों को सम्मिलित करते हुए शोध अध्ययन किया गया है। बीकानेर शहर के विकास के संदर्भ में अमेरिकी समाज शास्त्री बर्गेस द्वारा प्रतिपादित किया गया है। श्री बर्गेस द्वारा शिकागों नगर

के तेजी से तकनीकी विकास को प्रमुख कारण माना जिसके आधार पर 5 सकेन्द्रिय वलय (1) आन्तरिक केन्द्रीय व्यापारिक क्षेत्र (2) संक्रमण पेटी (3) श्रमिक लोगों के रिहायसी मकानों के क्षेत्र (4) श्रेष्ठतर रिहायसी मकानों के क्षेत्र अथवा मध्यम श्रेणी के लोगों का निवास क्षेत्र (5) नगर को अधिगम करने वालों के क्षेत्र को प्रतिपादित किया।

3. शोध क्षेत्र बीकानेर शहर की बदलती नगरीय आकारिकी के प्रभाव

शोध क्षेत्र बीकानेर शहर की बदलती नगरीय आकारिकी के स्वरूप के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं

4. सकारात्मक प्रभाव

नगरीय आकारिकी स्वरूप में बदलाव से नगर पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़ते हैं। नगरीय स्थापना से लेकर वर्तमान विकसित स्वरूप तक बीकानेर की नगरीय आकारिकी में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। नगर निगम की स्थापना, स्टेडियम स्थापना, अनेकों शिक्षण संस्थान, परिवहन व्यवस्थाओं में इजाफा, अनेक सरकारी भवन, नयी सार्वजनिक सुविधाएँ, औद्योगिक गतिविधियों का विकास नयी इमारतों का निर्माण, अनेक पार्क की स्थापना आदि अनेकों परिवर्तन हुये हैं जो शहर को विकासोन्मुख बनाते हैं।
नगरीय आकारिकी स्वरूप में हुये बदलावों से नगर पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझाने का प्रयास किया गया

4.1. रोजगार में वृद्धि

बीकानेर शहर में जैसे-जैसे उद्योगों का, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों व अन्य सार्वजनिक व गैर सार्वजनिक संस्थाओं व सुविधाओं का विकास हुआ है वैसे-वैसे यहां के नागरिकों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती जा रही है।

4.2. औद्योगिक संरचना का विस्तार

पिछले कुछ दशकों में नगर नियोजकों ने बीकानेर के उद्योग क्षेत्र में काफी निवेश कर रही है। बीकानेर मास्टर प्लान के अनुसार सन् 2001 में 692 एकड भूमि औद्योगिक विकास के अंतर्गत शामिल की गयी है, जो कि पिछले दशकों से काफी अधिक थी। इस बढते हुये औद्योगिक विकास से बीकानेर नगर की आय में भी वृद्धि हुयी है तथा सरकार ने इस बढ़ते हुए राजस्व से नगर में अनेकों निर्माण कार्य सम्पन्न करवाये है।

4.3. सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि

बीकानेर शहर की स्थापना व उसके कुछ दशकों बाद के समय बीकानेर का जो ऐतिहासिक स्वरूप था उसमें वर्तमान समय तक बहुत अधिक परिवर्तन हो चुका है। वर्तमान में बीकानेर की बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुय सरकार द्वारा बीकानेर नगर में पार्क, स्टेडियम, अस्पताल बड़े चिकित्सालय नई सड़क लाइन विद्युत लाइनों का विछाव व अनेकों अन्य इमारतों का निर्माण करवाया गया है, जो बीकानेर नगरीय आकारिकी में परिवर्तन को इंगित करते है तथा यह परिवर्तन बीकानेर शहर के लोगों के लिये लाभकारी सिद्ध हुआ है।

4.4. निजी निर्माण कार्य व जनसुविधा

बदलते परिवेश के साथ-साथ न केवल सरकारी संस्थाओं ने बल्कि निजी लोगों ने उद्योगपतियों ने भी नगर में अनेक तरह के निर्माण किए है। जो लोगों को सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ किसी नगर की सुंदरता, उसकी पहचान, उसके स्वरूप व वहाँ पर उपलब्ध सुविधाएँ के बारे में बताता है। इस तरह के निर्माण कार्यो में कोचिंग सेंटर, शिक्षण संस्थान, मनोरंजनात्मक स्थल (थियेटर), होटल, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थल आदि सम्मिलित होते है।

4.5. पर्यटक आगुन्तकों में वृद्धि

बीकानेर जिला पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही समृद्ध जिला है। लेकिन बीते कुछ दशकों में ही बीकानेर जिले में पर्यटक आगुन्तकों की भारी वृद्धि हुयी है। ऐसा इसलिए कि पहले पर्यटकों के लिए आधारभूत संरचनाओं का अभाव था, जैसे उनके ठहरने के लिए उपयुक्त गेस्ट हाउस, परिवहन के लिए पर्याप्त व उच्च स्तर के साधन व व्यवस्थाएँ, उत्तम प्रकार के भोजन की व्यवस्था आदि । लेकिन वर्तमान में बीकानेर नगर की नगरीय आकारिकी में काफी परिवर्तन को इंगित करते है तथा

यह परिवर्तन बीकानेर शहर के लोगों के लिये लाभकारी सिद्ध हुआ है।

4.6. रहन-सहन स्तर में वृद्धि

बीकानेर नगरीय आकारिकी में सम्पन्न हुये बदलावों के कारण लोगों को न केवल अनेकों तरह की सुख-सुविधाएँ मिली हैं, बल्कि उनकी आय में वृद्धि हुयी है। बढ़ती आय वृद्धि के कारण लोगों की क्रय क्षमता में वृद्धि हुयी है तथा व अधिक भौतिक सुख-सुविधाओं को जुटाने में सक्षम हो गये है। इसका स्पष्ट रूप से अंदाजा लोगों के मकानों की बढ़ती संख्या व मकानों की भव्यता से भी लगाया जा सकता है।

4.7. आर्थिक विकास में वृद्धि

सरकारी व गैर सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप बीकानेर नगर में अनेकों तरह के निर्माण कार्य किये गये जैसे नये-नये उद्योगों की स्थापना, होटल की स्थापना, निजी चिकित्सलायों की स्थापना आदि और ये सब नगर को आर्थिक विकास की ओर लेकर गये है।

5. नकारात्मक प्रभाव

5.1. शहर के आन्तरिक भागों में रेल्वे फाटकों की समस्या

बीकानेर शहर की वर्तमान समय में सबसे बड़ी समस्या शहर के मध्य से गुजरने वाली रेलवे पटरी है जिसके कारण शहर के आन्तरिक भाग व भीडभाड़ वाले भागों में 6 फाटक बनाये गये है। इन फाटकों के कारण शहर के लोगों को बेहद रूप से परेशानियों व कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

5.2. गोचर भूमि की समस्या

शोध क्षेत्र बीकानेर शहर की दूसरी बड़ी समस्या शहर के चारों दिशाओं में आने वाली गौचर भूमि की है जिसके कारण शहर किसी भी दिशा में सही तरीके से विकसित नहीं हो पा रहा है। यदि राज्य सरकार द्वारा इस गोचरभूमि को आगे शिफ्ट कर दिया जाये तो शहर का तेज गति से विकास देखने को मिल सकता है।

5.3. गन्दे नाले की निकासी की समस्या

बीकानेर शहर की एक बडी समस्या है गन्दे नाले की हैं। यह गन्दा नाला शहर के आन्तरिक भाग से निकलता है तथा यह काफी चौड़ा भी है जिससे इस नाले की गंदगी से विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं व कई जगहों पर बेहत तेज गन्दी बदबू भी आती है। शहर की आम जनता इस नाले से काफी परेशान है। यह नाला शहर की बड़ी-बड़ी कॉलोनियों से भी होकर गुजर रहा है। इसके अलावा यह नाला कई जगह से खुला होने के कारण इस नाले में कई बार जानवर भी गिर जाते है जिससे उनकी मौत हो जाती है।

5.4. यातायात की समस्या

शोध के बीकानेर शहर को यातायात की समस्या से गुजरना पड़ रहा है। शहर की यातायात व्यवस्था इतनी अधिक खराब है कि यहाँ पर किसी भी प्रकार के यातायात नियमों की पालना नहीं की जाती है। नियमों को तोड़ने में सबसे अधिक हाथ टैक्सी चालकों का है। शहर में टैक्सी व्यवस्था बेहत अधिक खराब है। जिसमें रोजाना सैकड़ों की संख्या में दुर्घटनाएं हो जाती हैं। इसके अलावा आम जनता द्वारा हेलमेट का भी कम प्रयोग किया जाता है।

5.5. टूटी-फूटी सड़कों की समस्या

शहर की समस्या में एक भारी समस्या टूटी-फूटी सड़कों की समस्या है। वर्तमा समय में शहर के काफी क्षेत्रों व आन्तरिक भागों में तथा विभिन्न कॉलोनियों व मौहल्लों में टूटी-फूटी सड़कें है जिसस इन क्षेत्रों में धूल मिट्टी उड़ती रहती है व आम जनता को इस उड़ने वाली धूल मिट्टी से होने वाली साँस की बीमारी का सामना करना पड़ रहा है।

राज्य सरकार व स्थानीय नेताओं द्वारा चुनाव प्रचार के समय शहर की इस हालत को सुधारने के लिए कहा जाता है लेकिन चुनाव के बाद कोई ध्यान नहीं दिया जाता है जिससे आम जनता को कोई राहत नहीं मिल रही है।

6. निष्कर्ष

बीकानेर शहर की आवासीय समस्या शहर के आन्तरिक भागों में अधिक देखने को मिलती है शहर के आन्तरिक भागों में कुछ ऐसी जगह भी हैं जहाँ पर उन गलियों से

गुजरना की मुश्किल काम हो जाता है। आने वाले समय में यह शहर की एक भारी समस्या का रूप लेगी।
रेलवे पटरी के बाहर से निकालकर व शहर के आन्तरिक भागों में रेलवे फाटकों पर बीज बनवाकर शहर को एक भारी समस्या से छुटकारा दिलाया जा सकता है। शहर की गौचर भूमि की समस्या है जिसका निवारण राज्य सरकार द्वारा गोचर भूमि को शहर से दूर स्थापित किया जा सकता है। किसी भी नगर आकारिकी को प्रभावित करने वाले दो प्रमुख कारक प्राकृतिक व सांस्कृतिक इसमें सहिष्णुता से नगर के आकार के साथ नगर का विकास किया जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मौर्य, एस. डी.,नगरीय भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. लोढा, आर. एम. (1964) चित्तौडगढ नगर के ऐतिहासिक विकास।
3. बोस, आशिष (1976). "बिबलियोग्राफी ऑन अरबनाईजेशन इन इण्डिया", 1947-1976, नई दिल्ली।
4. सिंह, आर.एल.(1995) " नगरीय भूगोल प्रभाव क्षेत्र, नेशनल जियोग्राफी सोसाइटी ऑफ इंडिया।
5. सिंह, सविन्द्र एण्ड तिवारी, आर.सी. (1989) ज्योमोर्फोलोजी एण्ड एन्वायरमेण्ट (एडिटेड) इलाहाबाद ज्योग्राफी सोसाइटी, डिपार्टमेण्ट ऑफ ज्योग्राफी. इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।
6. खांडल, आभा (2001) Geographical Analysis of Housing Problems in Jaipur city"।